50 साल पहले

क्या कुछ हो रहा था अमेरिका और भारत में

दीपांजली काकाती

राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहॉवर ने राष्ट्रपति के रूप में अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत जनवरी 1957 में की। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने एकता और आज़ादी पर बल दिया और ऐलान किया कि अमेरिका का दृढ़ और स्थायी मकसद शांति तथा न्याय से परिपूर्ण एक ऐसी दुनिया का निर्माण करना है, जहां नैतिक कानूनों की जीत हो। इसके दो साल बाद आइजनहॉवर भारत का दौरा करने वाले अमेरिका के पहले राष्ट्रपति बने। उनके कार्यकाल में ही अमेरिका में 1957 का नागरिक अधिकारों का अधिनियम पेश किया गया। इसने नागरिक अधिकार विधायी कार्यक्रम की शुरुआत में अहम भूमिका निभाई। वर्ष 1964 के नागरिक अधिकार अधिनियम और वर्ष 1965 का मताधिकार अधिनियम इसका हिस्सा बने जिनसे अमेरिका में सरकारी स्तर पर होने वाले सभी तरह के नस्लीय भेदभाव का हमेशा के लिए खात्मा कर दिया गया।

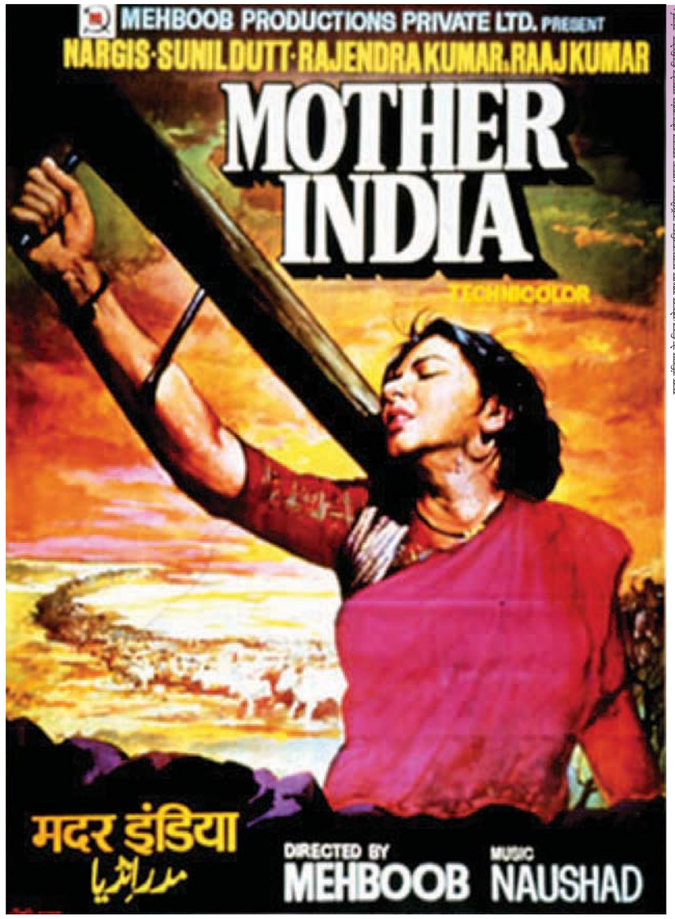

मदर इंडिया के चित्र: फेस्ट सागर एसोसिएशन कॉर्पोरेट भारत महबूब प्रोडक्शंस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई।

मदर इंडिया भारत की एक यादगार फ़िल्म है। अक्टूबर 1957 में रिलीज हुई इस फ़िल्म के निर्माता-निर्देशक थे महबूब खां। यह ग्रामीण भारत के एक परिवार के कड़वे-मीठे अनुभवों की कहानी है। 1958 में ऑस्कर के लिए सर्वश्रेष्ठ विदेशी फ़िल्म की श्रेणी में नामांकित होने वाली यह भारत की पहली फ़िल्म थी। इस फ़िल्म में नरगिस ने यादगार भूमिका निभाई जिसमें भारतीय समाज के नैतिक मूल्यों और परंपराओं को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया। फिल्म में नरगिस के विद्रोही बेटे की भूमिका सुनील दत्त ने निभाई। बाद में नरगिस से उनकी शादी हो गई।

30 साल की **एल्थिया गिब्सन** विंबलडन का महिला एकल खिताब जीतने वाली अफ्रीकी मूल की पहली अमेरिकी महिला बनीं। न्यू यॉर्क शहर में उनके सम्मान में परेड का आयोजन किया गया और न्यू यॉर्क सिटी हॉल में उनका आधिकारिक रूप से स्वागत किया गया। गिब्सन की कामयाबी का अगला पड़ाव था, फॉरेस्ट हिल में हुई अमेरिकी चैंपियनशिप, यानी ग्रैंड स्लैम स्पर्धा। इसमें भी उन्होंने एकल महिला खिताब जीता और वह दुनिया की नं. 1 महिला टेनिस खिलाड़ी बनीं। एशिया में टेनिस को बढ़ावा देने के लिए गिब्सन ने 1955 में भारत का दौरा किया। इस दौरे को विदेश विभाग ने प्रायोजित किया था।

© पी. पी. ब्रूस, न्यू यॉर्क

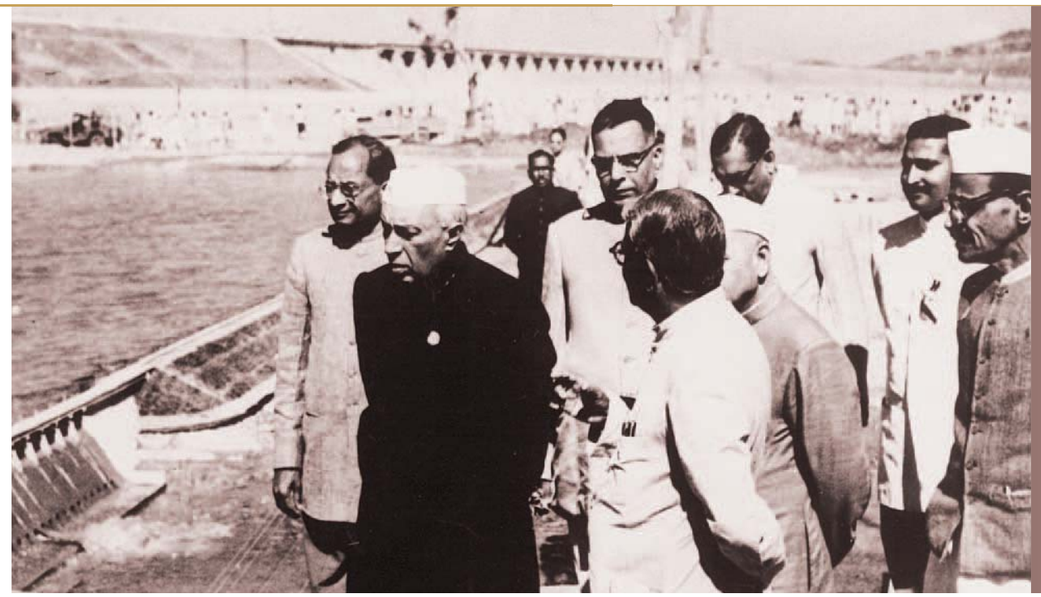

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 13 जनवरी 1957 को उड़ीसा में दुनिया के सबसे लंबे बांधों में से एक- **हीराकुड** का उद्घाटन किया। यह बांध और इसके तटबंध, दोनों मिलाकर 25.8 किलोमीटर लंबे हैं। यह महानदी को बांधने की शृंखला का सबसे पहला प्रयास था। 745 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के जलाशय वाला यह बांध भारत के सबसे बड़े बांधों में से एक था। इसकी जल संग्रहण क्षमता 60 लाख एकड़ फुट से ज्यादा थी। इस बांध से निकाली गई नहरों से 271,950 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई होती थी और बांध के जेनरेटरों तथा एक सहायक बिजलीघर की स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता 232,500 किलोवाट थी। अमेरिका के तकनीकी सहयोग मिशन ने इस परियोजना के लिए 30 लाख डॉलर मूल्य के उपकरण प्रदान किए।

साभार: एकेडेमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज

अराउंड द वर्ल्ड इन 80 डेज जूल्स वर्न के उपन्यास पर आधारित एक बड़े बजट की फ़िल्म थी और इसने अपने समय में सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म के खिताब सहित पांच ऑस्कर जीते थे। इसका नामांकन आठ ऑस्कर पुरस्कारों के लिए किया गया था। इसमें डेविड निवेन ने एक ब्रितानी फिलियास फॉग की भूमिका निभाई जो अपनी ही धुन में खोया रहता है। उसकी शर्त लग जाती है कि वह 80 दिन में पूरी दुनिया का भ्रमण कर सकता है। अपने सफ़र की शुरुआत वह लंदन से करता है और ट्रेन, जहाज, हाथी तथा उड़न गुब्बारों की मदद से अपना अभियान जारी रखता है। फॉग का साथ इस यात्रा में उनके नौकर ने दिया जिसके पास हर मुश्किल का हल होता था। इस नौकर की भूमिका मेक्सिको के मशहूर कॉमेडियन कैंटिनफ्लॉस ने निभाई। अपनी यात्रा के दौरान वे एक भारतीय राजकुमारी औदा को बचाते हैं, जो अपने पति की चिता के साथ जलने जा रही थी। औदा की भूमिका शर्ले मैक्लेन ने निभाई। माइकल एंडरसन द्वारा निर्देशित इस शानदार फ़िल्म ने अतिथि कलाकार की भूमिका के विचार को जन्म दिया। फ्रैंक सिनात्रा, मर्लिन डाइट्रिश और रेड स्केलटन भी छोटी भूकाओं में थे, कभी-कभी छद्म वेश में।

घड़ियों में हाथ से चाबी भरने की आदी दुनिया को इस आदत को अलविदा कहने का वक्त आ गया था। लैंसेस्टर, पेंसिल्वैनिया की हैमिल्टन वाच कंपनी ने 3 जनवरी 1957 को बड़ी धूमधाम के साथ बैटरी से चलने वाली दुनिया की पहली घड़ी को बाज़ार में उतारने का ऐलान किया। इस घड़ी को ***वेंचुरा*** नाम दिया गया। यह बात अलग थी कि असमान आकार के डिज़ाइन के चलते इसकी नई प्रौद्योगिकी के बारे में उतनी चर्चा नहीं हो पाई। वेंचुरा को सबसे पहले काले और सिल्वर डायल के साथ 14 कैरट के सुनहरे केस में पेश किया गया। शुरू में इसे 24 कैरट सोने के मैचिंग स्ट्रैप (फीते) के साथ लाया गया, लेकिन कुछ ही महीने बाद इसकी जगह परंपरागत फीते ने ले ली।

साभार: हैमिल्टन वाच कंपनी

एशियाई कलाकारों के डिज़ाइन उकेरे हुए अमेरिकी क्रिस्टलों की पहली प्रदर्शनी भारत में मई 1957 में लगाई गई। इनमें भारत के पांच प्रख्यात कलाकारों का काम भी शामिल था। **'क्रिस्टल में एशियाई कलाकार'** नामक इस प्रदर्शनी में भारत के जेमिनी रॉय, फणि भूषण, गोपाल घोष, रमा महाराणा और के. एस. कुलकर्णी की 36 कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया था। अमेरिकी दस्तकारों ने इनकी कलाकृतियों को स्ट्युबेन क्रिस्टल पर उकेरा था। इन कलाकृतियों को न्यू यॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी के क्यूरेटर (प्रिंट्स) कार्ल कुप ने एकत्र किया था। न्यू यॉर्क की स्ट्युबेन ग्लास कंपनी द्वारा निर्मित इन निहायत खूबसूरत क्रिस्टलों में बौद्ध, हिंदू एव इस्लामी विचारधारा और परंपरा को उकेरा गया। यह प्रदर्शनी कोलकाता, नई दिल्ली, मुंबई और चेन्नै में लगाई गई थी।

गनस्मोक को अमेरिका के मशहूर टीवी शो में शुमार किया जाता है। इसे अक्सर पश्चिम का पहला वयस्क टीवी शो भी कहा जाता है। यह एक रेडियो धारावाहिक था, जिसे टीवी के पर्दे पर उतारा गया। इसकी हर कड़ी में कुछ ऐतिहासिक संदर्भों के साथ अमेरिका के जीवन को दिखाया गया। रेडियो के लिए इसे कैन्सस के डॉज शहर में 1870 में तैयार किया गया। 'गन स्मोक' अमेरिकी समाज की जीवनधारा की खोज का एक प्रयास था। इसमें बैंक डकैतियों, मवेशियों की लड़ाई और गोलीबारी के दृश्य भी शामिल थे। 1955 से 1975 के बीच इसकी 635 कड़ियों का प्रसारण किया गया, जो प्राइम टाइम पर लगातार जारी चरित्रों वाले किसी प्रोग्राम के लिए रिकॉर्ड है। इनमें से ज़्यादातर में डेनिस वीवर (बाएं) डिप्टी की भूमिका में थे और सभी में जेम्स अर्नेस (दाएं) शेरिफ़ मैट डिलॉन की भूमिका में। इसके प्रणेता जॉन मेस्टन ने एक बार मजाक में कहा था, "अगर मुझे पता रहता कि यह इतना लंबा चलेगा तो मैं इसका निर्माण ही न करता।"

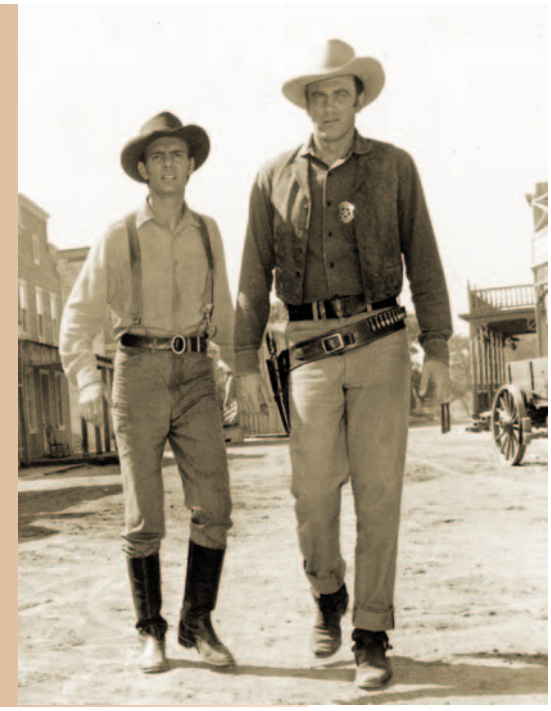

© यू. इमेज बैंक्स यू.के.